The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों में मानवीय मूल्यःएक अध्ययन

डॉ0 श्रीराम सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर बी0एल0एड्0 विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रकसा, रतसर–बलिया।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :

सामाजिक अशांति, महात्मा गांधी और मूल्य, मानवीय मूल्य, शैक्षिक विचार, शांति शिक्षा

ABSTRACT

महात्मा गांधी जी अपने अहिंसक, सहिष्णु, शांतिवादी और मानवतावादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। गांधी जी जिन्हें हम पवित्र तथा त्यागमय जीवन के कारण महात्मा, स्नेह के कारण बापू तथा राष्ट्र निर्माता होने के कारण राष्ट्रपिता भी कहते हैं। इस लेख के माध्यम से लोग महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों एवं मानवीय मूल्यों के बारे में जान सकेंगे। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से शोधकर्त्ता इस दृढ निश्चय पर पहुंचे कि महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों में व्यक्त मानवीय मूल्य आज के भारत के सन्दर्भ में बहुत ही प्रासंगिक है। भारतीय समाज और सभ्यता इस समय बेहद कठिन दौर से गुजर रही हैं। राजनीतिक हिंसा, आर्थिक स्थिरता और सबसे बढकर मानवीय मूल्यों की कमी पूरे देश को महात्मा गांधी द्वारा प्रदर्शित मानवीय मूल्यों का अहसास कराती है।

परिचय–

मनुष्य इस सृष्टि की सबसे अद्भुत रचना है। मनुष्य निर्णय, व्यवहार और मानसिक दृष्टि से सभी प्राणियों से अद्वितीय और भिन्न है। इसी विशिष्टता स्वयं को मानव सहित अन्य जानवरों से अलग सीान पर स्थापित किया है। क्यों कि इस बहमाण्ड की रचना कोई अचेतन किया नहीं है, न ही यह कोई उन्मुक्त क्रिया है। यह चेतन की अभिव्यक्ति है जिसमें मानवता मानवीय भावना है। सौजन्यता सुन्दर आनंदमय प्रगति की प्रबल छाप है। इस रचना के आनंद में एक ऐसे महापुरूष का परिचय

हुआ जो सच्चे समाजवादी और मानवता के प्रतीक थे। मोहनदास करमचंद्र गांधी राष्ट्र के पिता थे जिनके वास्तविक योगदान से भारतीय सभ्यता के साथ–साथ मानव समाज को आजादी मिली। उन्होंने मानव मन की कट्टरता और अंधविश्वासों को दूर करने का सार्थक प्रयास किया। महात्मा गांधी जी का जन्म कठियावाड.(गुजरात) के पोरबन्दर नामक स्थान पर 02 अक्टूबर 1869 को हुआ। उनके पिता पोरबन्दर राज्य के दीवान(प्रधानमंत्री) थे। वह एक समाज सुधारक, शैक्षिक दार्शनिक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और मानवतावाद के प्रतीक थे। गांधी जी मानव स्वभाव के विश्लेषण के साथ–साथ मनुष्य के धर्म में विशेष रूचि रखते थे। गांधी जी का धर्म बुद्विवाद और सिद्वांतवाद का धर्म था। उन्होंने उस विश्वास को अस्वीकार कर दिया जो उनके तर्क को अच्छा नहीं लगता था या ऐसी आज्ञा को अस्वीकार कर दिया जिससे उनकी अंतरात्मा सहमत नहीं थी। वे ईश्वर में आस्था रखते थे। गांधी जी का जीवन भारत की परम्परा में निहित था। इस धार्मिक विचारधारा ने सत्य की खोज के लिए उत्साह,जुनून और जीवन के प्रति गहरे सम्मान, शक्तिहीनता की विचारधारा और ईश्वर को जानने के लिए सब कुछ बलिदान करने की ईच्छा पर विशेष जोर दिया।

गांधी जी कहते थे कि मैं इसी आदर्श की खोज में जीवित हूँ। मैं इसकी तालाश में जी रहा हूँ। मेरी जीवन शक्ति इसी में निहित है। ऐसा जीवन जिसमें कोई जङ नहीं, कोई पृष्ठभूमि गहराई नहीं। इसलिए जीवन को जीवन का मूल्य देने, लोगों को मानवीय उत्कृष्ठता की स्थिति में स्थापित करने के लिए गांधी जी सदैव सक्रिय थे। उनका कहना था– मुझे पुर्नजन्म नहीं चाहिए। मैं तो बस संसार के दुखों को समाप्त करना चाहता हूँ। आत्मा का परमात्मा को यह आत्मसमर्पण केवल एक निवेदन नहीं था, यह मनुष्य को मानवता का परिचय देने का एक साधन था। इससे उनका रचनात्मक और मानवीय दृष्टिकोण स्पष्ट होता था। वे लालच और नफरत से मुक्त एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते थे जहां के लोगों के बीच कोई विवाद और सन्देह न हो। जो गांधी जी के सामाजिक विकास के विचार से भरा स्वर्ग हो। उनका उद्देश्य समकालीन भारतीय ग्रामीण समाज का विदेशी शासन,शोषण और पतनशील शिक्षा से बचाना था। वह लोगों को जीने के अधिकार के साथ एक संगठित समाज का निर्माण करना चाहते थे। वे सामाजिक विकास शिक्षा के माध्यम से ग्राम स्वराज की स्थापना करना, शोषण से मुक्त, स्वावलम्बी और शिक्षित आत्मनिर्भर गणतंत्र की स्थापना करना, लोंगों की अज्ञानता और अशिक्षा को दूर करना चाहते थे। गांधी जी हीन भावना, वैश्विक कल्याण की प्राप्ति की दृष्टि से एकता की भावना का जागरण और सेवा भाव का निर्माण, शिक्षा को जीवन के

केन्द्र में रखना, सभी के लिए शिक्षा का व्यापक आयोजन, चरित्र निर्माण और अच्छे नागरिकों का निर्माण शिक्षा के माध्यम से चाहते थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन शैक्षिक सुधार और सामाजिक विकास के लिए समर्पित कर दिया। उनका कहना था कि–मैं केवल एक ही मार्ग जानता हूँ अहिंसा का मार्ग। हिंसा का मार्ग मेरे स्वभाव के विपरीत है। अहिंसा और सत्य का मार्ग संकीण है। इसका अभ्यास हमारे दैनिक जीवन में भोजन से भी अधिक महत्वपूर्ण है। उचित रूप से खाया गया भोजन शरीर को पोषण देता है और उचित रूप से की गई अहिंसा आत्मा को पोषण देती है। इसके अलावा गांधी जी के जीवन दर्शन में मानवतावाद और मानवीय मूल्यों का व्यापक रूप से अभ्यास और सेवा की जाती है। मानवीय मूल्य अर्थात् मानव स्वभाव को उत्कृष्टता की ओर ले जाने वाला पहलू। आत्मबोध,आत्म बलिदान, ईमानदारी,प्रेम, अहिंसा, देश भक्ति और सेवा आदि मानवता का विकास करते हैं। इस तरह मानवता के प्रतीक गांधी जी ने खुद को समाज में स्थापित किया और देखा कि कैसे लोगों का प्रतिशोध, ईर्ष्या, घृणा, लालच, अंधविश्वास एवं क्रोध धीरे–धीरे उन्हें विकास की ओर ले जाते हैं। जब किसी व्यक्ति या समूह के जीवन में विकृति और हिंसा की व्यापकता, अस्थिरता, अनिश्चितता, अत्याचार, अराजकता, विलुप्त होने का भय लोगों को हताश कर देता है, तो लोगों के लिए इससे बचने का एकमात्र रास्ता मानवता या मानवीय मूल्यों की शरण लेना है। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण है। यानि निर्भयता, आध्यात्मिक शक्ति और निःस्वार्थ जैसे गुणों का विकास। यह शिक्षा न केवल सूचना एवं ज्ञान प्राप्त करने की साधन होगी बल्कि मानवीय गुणों के सर्वोत्तम विकास में सहायक होगी। इसलिए महात्मा गांधी जी चाहते थे कि उनको शिक्षा प्रणाली(नई तालीम) के माध्यम से व्यक्ति की आत्मनिर्भर अच्छी नागरिकता उजागर हो। जो एक संतुलित व्यक्तित्व के लिए जिम्मेदार हो तथा शिक्षा पर उनके विचार इस प्रकार व्यक्त किये गये हैं– शिक्षा का परिणाम भौतिक शक्ति नहीं बल्कि आध्यात्मिक बल होना चाहिए अर्थात् आत्मसंयम से चरित्र के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होगा। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान की अनुभूति होगी। महात्मा गांधी जी ने हाथ, हदय और मस्तिष्क के माध्यम से सीखने की वकालत की । हालांकि उनका जीवन और शिक्षा दर्शन मुख्य रूप से आदर्शवाद और प्रकृतिवाद से प्रभावित था, लेकिन यह मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के अनुरूप व्यवहारिक था। गांधी जी का मानवीय पक्ष और मानवीय मूल्य गरीब, पीडि.तों की पुकार, अज्ञानी, दलित, उपेक्षित और शोषित लोगों के लिए परिलक्षित होता है।

गांधी जी का सुविचारित दृष्टिकोण उनके कार्यों में धर्म, शिक्षा, समाज, नारी एवं जनजागरण, दिव्य विकास, चरित्र, मानवता विकास, आत्म चेतना का विस्तार, सार्वभौमिकता, मुक्ति के सिद्वान्तों का आदान–प्रदान पूर्व–पश्चिम संघ के माध्यम से प्रकट होता है। महात्मा गांधी जी का कहना था कि आज हमने जो सबसे बडी चीज खो दी है वह है मानवीय मूल्य। मनुष्य अपनी महिमा, सच्ची मानवता की गरिमा भूल गया है। जीवन की प्रचुरता, हदय की भावना, निर्णय की बुद्वि और काम का उत्साह खो गया है। आशावाद का स्थान निराशावाद ने ले लिया है। शाश्वत् अपूर्णता को पूरा करने का तरीका, सांसारिकता से सर्वोच्चता प्राप्त करने का तरीका और खोये हुए मानवीय मूल्यों को बहाल करने की अकांक्षा जो आज के समय में नहीं मिल सकती। इन सभी को गांधी जी ने अपने जीवन में बहुत ही खुबसूरती से समझाया। महात्मा गांधी जी ने सर्वोदय समाज की स्थापना की, जहां शिक्षा एक ऐसा माध्यम होगी जो व्यक्ति को मानवता की पूर्ण गरिमा प्रदान करेगी, चूंकि उन्होंने दृढ.ता से भारत के पुर्नजागरण के बीज बोये, इसलिए उन्हें भारतीय सभ्यता के अग्रदूत के रूप में चुना गया। जिस प्रकार महात्मा गांधी जी अतीत भारतीय चिंतन में प्रशंसनीय थे और प्राचीन भारत का महिमामण्डन करते थे, उसी प्रकार वे आम लोगों के जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण रखते थे। वे प्राचीन और आधुनिक भारत के बीच एक प्रकार के सेतु थे। गांधी जी के जीवन दर्शन और कार्य योजना से जो हमें मिला है, वह देश और दुनिया के लोगों के सर्वांगीण विकास की योजना है। राष्ट्र की आवश्यकताओं के बारे में पूरी तरह से निर्णय लेने और श्रेष्ठ मानवतावादी आदर्शों से प्रभावित हुए बिना, वह पराधीन भारत में मैग्नाकार्टा लिखने वाले प्रथम व्यक्ति थे। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों दुनिया के इतिहास में अंत तक का सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त महान मुक्ति चार्टर। गांधी जी ने अपने जीवनोन्मुख उन्माद में भारतीय एवं विश्व सभ्यता क आंदोलन एवं भविष्य की दिशा को पुर्नजीवित किया। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के युग में सुख की चाह बढने से मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है। मनुष्यों में करूणा, ईमानदारी, प्रेम, सम्मान, निःस्वार्थता, परोपकार, आत्म बलिदान, सहनशीलता आदि मानवीय मूल्य अनुपस्थित हैं। जिसके परिणाम स्वरूप समाज में मूल्य संकट उत्पन्न हो गया है। और जो शिक्षा मानवीय मूल्यों के विकास का माध्यम बन सकती थी, हमारे देश की प्रगति में सहायक हो सकती थी, वह आज सपनों की स्थिति में पहुंच गई है। फिर भी हमें यह देखना है कि नये युग के संदेशवाहक, मानवीय मूल्यों पर गांधी जी के विचार, मूल्यों के क्षरण के बारे में वर्तमान सोच के लिए कितने प्रासंगिक हो सकते हैं। गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में

मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। यह कितना व्यव्हारिक और उपयोगी है, इसका आकलन करने की आवश्यकता महसूस करते हुए शोधकर्त्ता ने इस संबंध में एक अध्ययन किया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुई जबरदस्त प्रगति के कारण आज लोगों में उपभोक्तावाद बढने से मानवीय मूल्यों में कमी आई है। आज लोग स्वयं को बर्बाद करने पर तुले हुए हुए हैं। वर्तमान में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रगति और सभ्यता की नई चीजें जीवन का सच्चा सुख और आनंद नहीं दे सकती हैं, भले ही वह लोगों को अस्थाई सांसारिक खुशी दे। गरीबी और जनसंख्या विस्फोट के कारण लोग धीरे–धीरे खुद को एकांत में स्थापित कर रहे हैं और एक अव्यक्त भय लोगों के मन में हिलोरें ले रहा है। आज लोगों के मन में मानवीय मूल्यों की कमी के कारण साम्प्रदायिकता, जातीय घृणा एवं अलगाववाद ने समाज में शत्रुतापूर्ण वातावरण पैदा कर दिया है। इसके अलावा वर्तमान भारतीय समाज को अपनी पहचान और पारंपरिक आदर्शों को त्यागकर पश्चिम का अनुकरण करने में पूरी तरह बर्बादी का सामना करना पडा है। उसने अपने मानवीय आदर्श, मानवता, आत्म सम्मान,कर्त्तव्य और निर्णय की भावना खो दी है। परिणामस्वरूप लोगों ने करूणा, सहानुभूति, प्रेम, सम्मान, निःस्वार्थता, परोपकार, आत्म बलिदान, ईमानदारी, सहिष्णुता एवं देशभक्ति आदि मानवीय मूल्यों को लगभग त्याग दिया है। इसलिए लोग आज अमानवीय एंव अवैयक्तिक होते जा रहे हैं। भारत में सामाजिक,राजनीतिक और मानव जीवन एक गहरे संकट में पहुंच गया है क्यों कि समाज के सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार और आपदायें लगातार सामने आई हैं। जनसंख्या विस्फोट और बेरोजगारी लोकतंत्र को नुकशान पहुंचाते हैं। आज लोगों के जीवन में न कोई अकांक्षा है, न आशा है, केवल जरूरते हैं और इस जरूरत को पूरा करने के लिए मनुष्य ने अपने शाश्वत मानवीय मूल्यों को लगभग त्याग दिया है। आज दुनिया के सामने दो रास्ते हैं परमाणु बम या महात्मा गांधीं। परमाणु बम का मार्ग विनाश का मार्ग है, महात्मा गांधी का मार्ग महान जीवन का मार्ग है। उन्होंने दुनिया को बताया और अपने जीवन से साबित किया कि आध्यात्मिक ताकतों के सामने परमाणु बम कमजोर होते हैं। सूर्य समस्त प्रकाश का स्रोत है इसलिए पृथ्वी पर सूर्य से अधिक शक्तिशाली कोई अन्य प्रकाश नहीं हो सकता। उसी प्रकार सृष्टि का स्रोत मनुष्य है। वह रचना कभी भी मनुष्य की शक्ति से अधिक नहीं हो सकती। दुनिया की सबसे बडी शक्तियों के बीच विनाश के

घातक हथियार जमा हो गये हैं और दोनों तरफ से दो सुझावों का इंतजार कर रहे हैं। भले ही पलक झपकते ही पूरी दुनिया नष्ट हो जाये लेकिन इसमें से अधिकांश अपरिहार्य हैं। सभी की निगाहें गांधी जी की ओर मुड गईं। वह अपनी मां की तालाश कर रहा है अपनी जान बचाने के लिए वह अपनी मां की गोद में मरना या जीना चाहता है। हडताल, असहयोग, डांडी यात्रा पदचिन्ह जब हम यात्रा शुरू करेंगे तमाम हिंदुस्तान उठेगा, व्यक्तिगत सत्याग्रह,भारत छोडो, करेंगे या मरेंगे जैसे उनके तरीके भारत के राजनीतिक इतिहास में प्रलय पैदा करते हैं। और ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खत्म करते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति तमाम बर्बरता के बावजूद भारतीय एकता और समानता के सामने टिक नहीं सकी जैसे–जैसे महात्मा जी का मूल स्वभाव महानता तक पहुंचा आपके जीवन में सभी दिशाओं में मानव समाज और विश्व प्रकृति के महान रहस्यों को खोला गया । निखिल की समग्रता को आपके हदय में आकर्षित किया गया। एक महान चेतना पैदा की गई और महान जीवन की महानता तक पहुंचाया गया। व्यक्ति ने लोगों की आंखों के पीछे दुनिया का केन्द्र बिन्दु ले लिया। यह विचार करने का समय है कि गांधी जी का जीवन दर्शन आदर्श कार्य जीवन और उनके शैक्षिक चिंतन में व्यक्त मानवीय मूल्य वर्तमान अधिनायकवादी समस्याओं के समाधान में कितनी सक्रिया भूमिका निभा सकते हैं ऐसा करने के लिए उनके शैक्षिक चिंतन में मानवीय मूल्यों के निर्णय का विश्लेषण करते समय दो प्रश्नों को ध्यान में रखना आवश्यक है यानि पहला प्रश्न क्या गांधी जी अपने समय काल में ही प्रासंगिक थे। दूसरा क्या गांधी एक समय या सभी समय के लिए समान रूप से लागू होते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि चूंकि आज का सभ्य समाज भारतीय पारंपरिक आदर्शों के माडल पर बना है क्या गांधी जी का शैक्षिक दर्शन और मानवतावादी पहलू अभी भी बरकरार हैं यह अगले अध्याय में चर्चा का विषय है यह भी कहा जा सकता है कि गांधी जी की शिक्षा में मानवीय मूल्यों का विचार आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उनके समय में था। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा कि– आज हम एक महान संकट का सामना कर रहे हैं। ना केवल भारत के इतिहास में बल्कि विश्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय कई लोग मानते हैं कि हम सर्वनाश के कगार पर खडे हैं। वर्तमान समय मे जीवन मूल्य विकृत हो गये हैं नैतिकता का दमन हो गया है पलायन की मानसिकता सर्वत्र व्याप्त हो गई है यदि गांधी जी कोई आदर्श हैं तो हम विश्वव्यापी उन्माद से ग्रस्त हैं। जो हमारे सामने आता है वह आध्यात्मिक भाव है जहां मनुष्य में अनंत आध्यात्मिक संपदा निहित है। मनुष्य की आत्मा सर्वोच्च है मनुष्य अद्वितीय है। अद्भुत दूनिया में कोई

भी समस्या या खतरा अपरिहार्य नहीं है। मनुष्य के रूप में हम अत्यधिक खतरों और विकलागंताओं पर काबू पा सकते हैं। हमें बस सावधान रहना है कि हम उम्मीद न खोयें। इसी तरह गांधी जी ने हमें दर्द में आश्रय दिया,दुःख मे आशा दी, निराशा में साहस दिया। चीनी विचारक लिन यू तांग ने ठीक ही कहा है आत्म शक्ति के विशाल सत्य वेद ने गांधी जी की आत्म कथा को कितनी महिमा और गरिमा से प्रकाशित किया उसे मौलिक और वास्तविक प्रतिभा से विकीर्ण किया कि भविष्य के असंख्य लोग इस शानदार उदाहरण और अद्वितीय दृष्टि से आश्चर्यचकित हैं। बहुत लम्बे समय तक केवल चिंतन ही होता रहेगा। वह आधुनिक युग के महर्षि हैं। यह विकास और विकास के पथ पर गांधी का सत्यलोक मार्ग है । हमने विकास और विकास के इस पथ में चौदहवें ग्रह का भी जाना देखा है। मैंने गांधी जी के विचारों में लोगों के प्रति कितना गहरा प्रेम देखा। इसीलिए वे हरिजन बन गये। सभी प्राणियों के प्रेम से मोहित होकर उन्होंने सत्यप्रिय, अहिंसा और सत्यलोक का मार्ग देखा इसीलिए महात्मा गांधी मानवतावाद की खुशबू वाले एक महान व्यक्ति है।

अध्ययन का उद्देश्य–

शोधकर्ता शोध कार्य के उद्देश्यों का पालन करते हुए अपने शोध का विश्लेषण करता है जिसमें शोध उद्देश्य के निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है–

(1) गांधी जी के अनुसार शिक्षा के समग्र अर्थ का निर्धारण

(2) गांधी जी के शैक्षिक विचारों में मानवीय मूल्यों के पहलूओं की खोज

(3) मानवीय मूल्यों पर गांधी जी के विचार उस समय कितने प्रासंगिक थे इसका आकलन एवं सत्यापन करना।

(4) वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों के बारे में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता का आकलन एवं सत्यापन करना ।

मानवीय मूल्यों के पहलुओं की खोज अहिंसा। यदि प्रेम या अहिंसा हमारे आस्तित्व का नियम नहीं है तो हमारा पूरा आस्तित्व खण्डित हो जाता है। महात्मा गांधी के जीवन का दर्शन और शिक्षण में व्यक्त सबसे महत्वपूर्ण मानवीय मूल्य अहिंसा है। हिंसक स्थितियों में अहिंसा का सूत्र खोजने वाले ऋषि

मुनि न्यूटन से भी अधिक प्रभावशाली थे क्यूं कि हथियारों के प्रयोग को जानकर उन्होंने इस निरर्थकता को समझा और युद्व से थके विश्व को सिखाया कि उनकी मुक्ति का रास्ता हिंसा नहीं बल्कि अहिंसा है जो गांधीवाद का मूल सूत्र है। उन्होंने अहिंसा की छत्रछाया में स्वयं को भारत एवं विश्व के इतिहास में स्थापित किया। गांधी जी ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए यह बताया कि अहिंसा मानव जाति का कानून सिद्वान्त है। जो पाश्विक बल से असीम रूप से महान और बेहतर है। अंतिम विश्लेषण में अहिंसा उन लोगों के लिए किसी काम की नहीं जिनका प्रेम ईश्वर में जीवन्त विश्वास नहीं ला सकता। उनका कहना था कि अहिंसा के द्वारा मनुष्य के आत्मसम्मान और गरिमा की रक्षा की जा सकती है। उनका कहना था कि गलत तरीके से अर्जित धन और अनैतिक गतिविधियां अहिंसा में मदद नहीं करती। गांधी जी कहते थे कि मैं केवल एक ही मार्ग जानता हूं वह है अहिंसा का मार्ग। हिंसा का मार्ग मेरे स्वभाव के विपरीत है। उन्होंने यह भी कहा कि अहिंसा की शिक्षा सभी धर्मों में विद्यमान है लेकिन मेरा गहरा विश्वास है कि शायद इस भारत में अहिंसा का प्रयोग एक विज्ञान बन गया है इसलिए आज क्रोध के जवाब में प्रेम और ईर्ष्या के जवाब में अहिसा के शाश्वत नियम की जरूरत है चूंकि अहिसा ही वह मार्ग है जो स्वाभाविक रूप से दैनिक जीवन में प्रयोग करना चाहिए। सभी लोगों को अहिंसा की शिक्षा दी जानी चाहिए। मानव के हाथ में सबसे बडी शक्ति अहिंसा है। मानव द्वारा बनाये गये सबसे घातक हथियारों की तुलना में अहिंसा एक अधिक मजबूत और महान् मानवीय गुण है। विनाश मनुष्य का नियम नहीं है। मनुष्य स्वतंत्र ईच्छा के साथ जी सकता है यदि वह हमेशा मरने के लिए तैयार रहे। अहिंसा सक्रिया रेडियम की तरह है यदि शरीर में कहीं भी गंभीर वातस्फीति है तो रेडियम का एक छोटा सा टुकडा वहां डाला जाये तो लगातार चुपचाप और अंतहीन रूप से काम करेगा जब तक कि प्रभावित ग्रन्थि स्वस्थ न हो जाये इसी प्रकार अहिंसा सक्रिय होकर पूरे समाज के कल्याण के लिए काम करती है।

अहिंसा का सार्वभौमिक सिद्वान्त प्रतिकूल वातावरण में इसके प्रयोग में बाध नहीं आती बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी इसकी प्रभावशीलता की परीक्षा होती है फिर अहिंसा का धर्म समस्थ जनमानस पर लागू होता है। अहिंसा उस तरह है जो मानव प्रेम एवं मानवीय मूल्यों में सौन्दर्य का बोध कराती है। हमें गांधी जी के शिक्षा और जीवन दर्शन के विश्लेषण में सत्य और सौन्दर्य का बोध प्राप्त होता है। जीवन में विकासवाद न केवल एक बुद्वि को बल्कि मानव समझ के स्वाद में एकरूपता को प्रकट करता है। यह खूबसूरत होता है और सुन्दर के साथ इसे पूर्ण सत्य और शिवत्व को प्राप्त करता है।

उस अवस्था में प्रेम का देवता हदय में प्रकट होता है। और मानव इन्द्रियों को प्रबुद्व करता है। बापू ने दृढ विश्वास के साथ कहा कि मैं हर मानव में भगवान को देखना चाहता हूं क्यों कि भगवान न तो स्वर्ग में है और न पाताल में। इसीलिए उन्होंने हिन्दू ,मुस्लिम या अन्य जाति समूह के बीच कोई मतभेद नहीं किया। लोगों की चीख पुकार से वह द्रवित हो गये। देश, धर्म, ईसाई पीडित भूखे के नाम पर धोखेबाज के पैरों तले कूचले लोगों की दुर्दशा, बच्चे अत्याचारियों के शिकार, तानाशाहों का व्यभिचार, असहाय और गरीबीर उत्पीडित महिलाओं का अपमान, दर्दनाक दुनिया ने उसे पीडित किया। गांधी जी की गहरी करूणा उत्पीडित और अपमानित लोगों के प्रति थी।

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करते हुए हम ईमानदारी को मानवीय मूल्यों के अभिन्न अंग के रूप में देखते हैं। गांधी जी ने कहा था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य के द्वारा ही हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हमें सबसे पहले हदय और आत्मा से शुद्व एवं ईमानदार होना चाहिए। आत्मा से शुद्व और ईमानदार होने पर सत्य स्वयं ही प्रकट होगा। उनके अनुसार सत्य सर्वप्रभु सिद्वान्त है। जिसमें असंख्य अन्य सिद्वान्त निहित हैं। इस सत्य की सच्चाई वाणी में ही नहीं अपितु विचार में भी विद्यमान है। यह केवल हमारे विचारों का सापेक्ष्य सत्य नहीं है यह पूर्ण सत्य है। उन्होंने कहा कि मैं ईश्वर की पूजा सत्य के रूप में ही करता हूं, क्यों कि सच्चा सत्य शक्तिशाली, पवित्र एवं सच्चा ज्ञान है। यह सत्य मन के अंधेरों को दूर करता है। समाज सेवा के द्वारा व्यक्ति और राष्ट्रों को सेवा धर्म के मार्ग पर खडा होना सीखाता है। उनका सह आस्तित्व तर्कसंगत विचार के लिए है। यही दृष्टिकोण और जीवन शैली का अभाव वर्तमान प्रगति में बाधक है। गांधी जी उपेक्षित और अपमानित लोगों की पीडा से दुःखी थे। इसलिए उनके हरिजन आंदोलन से जहां पुनः स्वराज की अष्भव्यक्ति और विकास हुआ जिसके द्वार समाज के इन अज्ञानी लोगों को ईश्वर के करीब बताया और उन्हें हरिजन कहा। उनके आत्मिक और सामाजिक विकास के लिए उन्होंने जीवन भर सेवा कार्यों में स्वयं को समर्पित कर दिया। गांधी जी के अनुसार मानव जाति को इन मानवीय मूल्यों के क्षरण से बचाने के लिए निःस्वार्थता, परोपकारिता और आत्म बलिदान जैसे मानवीय मूल्यों को वयक्त औैर विकसित करना होगा। मानवीय मूल्यों के लिए सभी आदर्श लोगों को बेहतर से बेहतर जीवन की ओर ले जाते हैं, इसीलिए चूंकि गांधी जी ने जीवन के सभी क्षेत्रों में सत्य और अहिंसा को स्वीकार किया इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आत्म बलिदान के आदर्श को अपनाने का भी सुझाव दिया।

गांधी जी देश की मुक्ति और मानव मुक्ति की आत्मा हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति ने अपनी अधिनायकवादी भूख से न केवल भारत को अलग थलग कर दिया बल्कि इसकी गरिमा को धूल में मिला दिया बल्कि राष्ट्र पर दमन और अत्याचार का बोझ भी डाल दिया। यही वह समय था जब गांधी जी भारत लौटे और उनका हदय सम्पूर्ण मानव जाति की पीडा से द्रवित हो गया। इसीलिए मानव जाति को समग्र रूप से देखने के बाद मानव का प्रत्येक क्रूर दुष्कर्म दुनिया पर हमेशा के लिए एक गहरा दाग छोड जाता है। गांधी जी ने कहा कि स्वदेशी में स्वार्थ का कोई स्थान नहीं। गांव–देश के लिए और देश मानवता के लिए बलिदान देगा। वह इसके माध्यम से लोगों में राष्ट्रीयता और विश्वबंधुत्व की भावना पैदा करना चाहते थे।

एक इंसान का बच्चा दुनिया में इंसान के रूप में जन्म लेता है। गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में हम ऐसे मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति देखते हैं जो व्यक्ति को सच्चा इंसान बनाने में मदद करता है। ईमानदारी और सहिष्णुता दो ऐसे मूल्य हैं जो लोगों को उनके पारंपरिक हितों से उपर उठकर वास्तविक इंसान बनाने में मदद करते हैं। वर्तमान समय में मूल्य हास आधुनिकता की मुख्य विशेषता है। अगले दस वर्षों के भीतर मानव ज्ञान का क्षेत्र इतना विशाल हो जायेगा कि यह पिछली शताब्दी के ज्ञान के योग के दोगुना हो जायेगा। विज्ञान के माध्यम से सभ्यता की उन्नति और नवीन समस्याओं का कारण भी बनेंगी। इस समस्या के दो पहलू विशेष रूप से प्रासंगिक हैं पहला ज्ञान में तेजी से बदलाव। इस बदलाव से लोगों की सोच में अनिश्चितता पैदा होगी क्यों कि इतनी तेजी से बदलाव में कोई भी ज्ञान स्थिरता को नहीं प्राप्त हो सकता। प्रख्यात वैज्ञानिक और शिक्षाविद् दौलत सिंह कोठारी कहते हैं कि ज्ञान आधारित दुनिया और कुछ हद तक अप्रत्याशितता अविभाज्य है अर्थात् पूर्णतः ज्ञान मीमांसी सोच अपने साथ मानव सोच में अनिश्चितता लाती है। वह जीवन की समस्याओं को सुलझाने में निर्णय लेने में झिझकने लगता है। यह दुविधा एक ओर लोगों को अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करने से रोकती है। सोच में यह संयम मनुष्य के मन में भ्रम पैदा करता है। वह अपने कर्त्तव्यों के बारे में उचित निर्णय लेने में विफल रहता है। इसे मनोवैज्ञानिक अर्थ में सोच का संकट कहा जाता है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण मानव जीवन के निर्वाह के लिए आवश्यक सामग्रियों में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। लेकिन साथ ही हमारे सामाजिक मानदण्ड इतनी तेजी से नहीं बदल रहे हैं। दूसरे शब्दों में सामाजिक दृष्टिकोण सामाजिक संगठनों में परिवर्तन की दर जीवन जीने के लिए आवश्यक सामग्रियों में परिवर्तन के साथ तालमेल नहीं बैठा पा रहीं हैं। विशेषकर विकासशील समाजों

में पिछडेपन की दर तुलनात्मक रूप से अधिक है। ऐसा पिछडापन स्वाभाविक रूप से व्यक्ति के जीवन में समायोजन की समस्यायें उत्पन्न करता है। इस परिवर्तन के लिए काफी समय की आवश्यकता है लेकिन इस बीच के दौर में निजी जिंदगी के साथ–साथ भी तरह –तरह की सजायें मिलने लगती हैं। व्यक्तिगत जीवन में संकट का एक कारण आधुनिकता की आवश्यकता और इस कुशल एवं पारंपरिक मान्यता के साथ अनुकूलन भी है। अतः रचनात्कम पिछडापन व्यक्तिगत जीवन में संकट का एक कारण है। यह संकट जीवन के अलग–अलग पहलुओं में अलग–अलग चरणों में तथा अलग–अलग समय पर दृश्यमान होता है। हालांकि मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने इसकी व्यवहारिक प्रकृति का विश्लेषण करते समय इस संकट के मुख्य स्रोतों में से एक पर ध्यान दिया है यह स्रोत हैं मूल्यों का संकट। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के अनुभव के आधार पर व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं सामाजिक मानदण्डों के समायोजन के माध्यम से अपनी जीवन शैली विकसित करता है यही उसके जीवन विकास का मुख्य लक्ष्य है। एक सामान्य व्यक्ति के जीवन के ये मूल्य उसके व्यक्तिगत अनुभव या ज्ञान और सामाजिक संस्कृति से निर्धारित होते हैं। इस घटना के फलस्वरूप जो दण्ड प्राप्त होता है उसे मूल्यों का संकट कहा जाता है। आज हम भारतीय समाज में जो व्यवहार देख रहे हैं उसका मूल कारण भारतीय समाज में मूल्यों का संकट है।

उस समय भारत में गांधी जी के शैक्षिक विचारों में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का आकलन गांधी जी के शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों में ऊंचा स्थान रखता था जो समाज और शिक्षा व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डालता है। यह सच है कि गांधी जी के समय भारत में शिक्षा का प्रसार हो रहा था लेकिन उस शिक्षा से शिक्षित लोग समाज में खुद को साबित नहीं कर सके। इसका एक मात्र कारण शिक्षा में मानवीय मूल्यों का अभाव है। गांधी जी ने उस समय भारत के लोगों पर प्रयोग करके अपनी शैक्षिक योजना का खुलासा किया जिसे शुरू में दक्षिण अफ्रीका के टालिस्टाय फर्म और बाद में साबरमती आश्रम में लागू किया गया था। उनकी शिक्षा में चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण उपलब्धि की शिक्षा शामिल थी। इस शिक्षा व्यवस्था को बुनियादी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। गांधी जी के शैक्षिक दर्शन में मानवतावादी पहलुओं जैसे प्रेम, स्नेह,निःस्वार्थता, देशभक्ति, सेवा धर्म आदि का विशेष रूप से पालन किया जाता था। उस समय भारत की शिक्षा मानव समाज को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही थी। जिसके माध्यम से अपनाये गये मूल्यों के द्वारा भारत की निराशाजनक स्थितियों में बदलाव लाया जा सके। विशेषकार राधाकृष्णन आयोग की रूचि धार्मिक एवं नैतिक

शिक्षा में थी। हालांकि गांधी जी के भारतीय शिक्षा दर्शन में मानवतावादी मूल्यों का पालन किया गया।

गांधी जी ने मूल्यविहिन शिक्षा में जो आयाम जोडा वह आज भी भारत में समान रूप से प्रचलित है। वर्तमान भारत में गांधी जी के शैक्षिक विचारों में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का आकलन : वर्तमान 21 वीं सदी क विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित मशीनीकृत सभ्यता में शिक्षा एक लोकप्रिय चर्चा का शब्द है। शिक्षा राष्ट्र की रीढ है अर्थात् आज की प्रगतिशील एवं गतिशील सभ्यता के परिणाम शिक्षा पर ही आधारित हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुई जबरदस्त प्रगति के परिणामस्वरूप आज लोगों में उपभोक्तावाद बढने से मानवीय मूल्यों में कमी आई है। आज लोगों के पास आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी तक पहुच गई है लेकिन जीवन अभी भी वैसा ही है। मानव मानवता के स्थान पर सम्प्रदायिकता, जातीय घृणा, अलगाववाद, स्वार्थ और हिंसा का पोषण हो रहा है। अतः समाज और सभ्यता की भांति वर्तमान में भी शिक्षा की स्थिति वही है। अतः वर्तमान शिक्षा में सबसे बडा अभाव मानवीय मूल्यों का है। मानवीय आदर्श ही मनुष्य को सुशोभित करता है न कि पशु स्वभाव को। इसलिए आज की शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा नितांत आवश्यक है। हमारी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य हमारे नागरिकों में ये गुण, ये मानवीय मूल्य पैदा करना है। आज मानवीय उत्कृष्टता की उस प्रचीन अवधारणा को फिर से समझने का समय है जिसके बारे में गीता में कहा गया है या हमें मानवीय मूल्यों की उत्कृष्टता को अपनाने का समय है। जीवविज्ञानी जूलियन हक्सले के अनुसार एक इंसान वह व्यक्ति है जो जागरूक सामाजिक भूमिकायें निभाते हुए अपने मात्र जैविक आस्तित्व की सीमाओं को पार करता है। जो कई अन्य लोगों से बने समाज में रहता है, उन पर प्रतिक्रिया करता है, और उनकी प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा करता है और इस तरह से एक प्रकार का चरित्र विकसित होता है, मूल्यों का विकास होता है। यह गांधी जी के परिलक्षित होता है जिसका मुख्य उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा का विकास करना था जिसके माध्यम से वह अच्छे नागरिक के रूप में समाज में खुद को स्थापित कर सके। इस प्रकार उन्होंने समाज में एकता और समानता का सपना देखा जिसे वर्तमान भारत में केवल मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही स्थापित किया जा सकता है। 21 वी सदी का आधुनिक समाज और कुरीति गांधी जी का समकालीन समाज भी पहले की सभ्यता से बिल्कुल अलग रूप में सामने आया है। जैसे–जैसे युग बदलते हैं, जीवन शैली बदलती है। लोग एक समाज से दूसरे समाज में चले जाते हैं, स्वीकार्य सामाजिक मानदण्डों ने स्वयं को लोगों के लिए आश्रम स्थल

के रूप में स्थापित कर लिया है। दूसरे शब्दों में गांधी जी के आहवान के भारत और आज के भारत में कोई समानता नहीं पाई जा सकती। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों के साथ–साथ शिक्षा व्यवस्था में भी व्यापक परिवर्तन आये हैं और सभी मामलों में राजनीति, अधिनायकवादी है। राजनीति की छाया में भारत अपनी प्राचीन विरासत को भूलता जा रहा है। आध्यात्म के शाश्वत आदर्श को भूला दिया गया है। आज भारतीयों ने जो सबसे बडी चीज खो दी है वह है मूल्य। चारों ओर मानवीय मूल्यों का हास हो रहा है इस स्थिति से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता महात्मा गांधी के मानवीय मूल्यों के बारे में विचार है जिसे हमें सबसे पहले स्वीकार करना चाहिए। अतः वर्तमान समय में हमें महात्मा गांधी के मानवतावाद पर सबसे अधिक जोर देना होगा। आज यदि हम अपने राष्ट्रीय जीवन की दुर्बलता एवं पतन को रोककर प्रगति के पथ पर अग्रसर होना चाहते हैं, यदि हम भारतीय समाज में महान व्यक्तियों के विकास की आस्था रखते हैं, यदि हम राष्ट्रीय एकता को बनाये रखना चाहते हैं तो हमें आज हमें महात्मा गांधी के मानवीय मूल्यों की सोच को अपनाना होगा और इस प्रस्तुतीकरण में शोधकर्ता ने शोधकार्य को सार्थक बनाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष–

वर्तमान अध्ययन के परिणामों के अनुसार शोधकर्ता इस दृढ निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों में व्यक्त मानवीय मूल्य आज के भारत में बहुत ही प्रासंगिक है। वर्तमान मूल्यों के पतन से छुटकारा पाने के लिए हमें गांधी जी की विचारधारा से प्रेरित होकर उनके मानवीय मूल्यों के दर्शन को अपनाना होगा। यह रवैया अपनाने से पूरे देश को फायदा होगा। वर्तमान भारतीय समाज एवं सभ्यता अत्यंत नाजुक दौर से गुजर रही है। सामाजिक अशांति, राजनीतिक हिंसा, आर्थिक स्थिरता और सबसे बढकर मानवीय मूल्यों की कमी पूरे देश को महात्मा गांधी द्वारा आदर्शित मूल्यों का एहसास दिलाती है। आधुनिक भारत को सबसे पहले वास्तविक लोगों की आवश्यकता है। गांधी जी की मनुष्य निर्माण शिक्षा और चरित्र निर्माण शिक्षा से मनचाहा मनुष्य मिल सकता है। शिक्षा राष्ट्र की रीढ है। सच्ची शिक्षा देशभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना लाती है। लेकिन अब जरूरत है शिक्षा के माध्यम से लोगों में सुप्त मानवीय मूल्यों को जगाने की। गांधी जी ने ऐसी शिक्षा की बात की थी जो हमारे अन्दर मानवीय पक्ष को विकसित करेगी। और सम्पूर्ण मानव जाति को एक नये तरीके से जागृत करेगी। इसलिए जिस तरह वर्तमान शिक्षा में मानवतावादी मूल्यों की खोज अनिवार्य है उसी

तरह गांधी जी के मानवतावादी मूल्यों का दर्शन उनके शैक्षिक विचारों में प्रासंगिक है विशेषकर गांधी जी के शिक्षा में समकालीन भारत में सत्य, अहिंसा, परोपकार, देशप्रेम,निःस्वार्थता, मानवप्रेम आदि मानवीय मूल्यों को महिमामण्डित किया गया है। इसलिए मैं आज भी इसकी आवश्यकता से इंकार नहीं कर सकता। अतः अनुसंधानकर्ता गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में मानवतावादी पहलू के अनुप्रयोग का समर्थन करता है तथा इसके वर्तमान अनुप्रयोग के प्रति विशेष राय रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

(1) अग्रवाल,जे0सी0(2005)मूल्यों पर्यावरण और मानव अधिकारों के लिए शिक्षा। पटपडगंज, नई दिल्ली शिप्रा प्रकाशन।

(2) बदोपाध्याय,एस0के0(1960)मेरी अहिंसा–एम0के0गांधी। नवजीवन प्रकाशन।

(3) चक्रवर्ती एम0(1995)मनुष्य का गांधीवादी दर्शन।

(4) डुंडर,एच0एट0अल0(2016)मूल्यों के आलोक में एक आदर्शःमहात्मा गांधी। अकादमिक पत्रिकायें शैक्षिक अनुसंधान और समीक्षायें।

(5) मंडेलबाम,डी0जी0(1973) जीवन इतिहास का अध्ययनःगांधी,शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस

(6) पाल जे0(1998)गांधी जी का नैतिक दर्शन,नटराजन पुस्तक।